8.5.2020

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा - भाग 3
विषय - भाषा विज्ञान
पाठ - भाषा-[redacted] बोली।

छात्र-छात्राओं।

अभी तक हमलोगों ने भाषा की परिभाषा एवं उसकी विशेषताओं पर विचार किया है। जैसा कि पाठ्य-क्रम में निर्धारित है 'भाषा-बोली', इसलिए आज हमलोग भाषा और बोली पर विचार करेंगे।

भाषा की उत्पत्ति के संबंध में यह मान्यता रही है कि प्राचीन काल में उन स्थानों पर भाषा की उत्पत्ति हुई होगी जहाँ बहुत-से लोग एक साथ रहते होंगे। ऐसे स्थानों में किसी एक स्थान की बोली आरम्भ में उत्पन्न हुई होगी और ऐतिहासिक और भौगोलिक कारणों से अनेक बोलियाँ, उपबोलियाँ तथा भाषाएँ बनी होंगी। इन्हें ही मूल भाषा कही जायेगी। भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण का आधार भी इसी मूल भाषा पर टिका है। संसार में उतने ही भाषा-परिवार माने जायेंगे जितनी की मूल भाषाएँ होंगी। उदाहरणार्थ हम अपनी भारोपीय परिवार की भाषाओं को ही लें तो यह प्रधानतः भारत-यूरोपीय परिवार की भाषा थी। भौगोलिक परिस्थितियों में भाषा के विकास एवं इस परिवार की अनेक शाखाओं में बँटने के कारण चाहे बँटने का कारण अधिक जनसंख्या हो या कुछ लोगों का मूल स्थान से दूसरे स्थान पर चले जाने के कारण ही हुआ भाषा का विकास ही।

यह सर्वजनीन मान्यता है कि एक व्यक्ति की भाषा को व्यक्ति-बोली कहते हैं। एक प्रकार से भाषा का यह लघुतम रूप है। वैज्ञानिक दृष्टि से विचार करें

तो यह भी कहा जाता है कि मनुष्य हर क्षण बदलता रहता है। राम और श्याम 9 बजे वही राम और श्याम नहीं रहते जो 12 बजे थे ऐसी स्थिति में व्यक्ति-बो भी बदलती रहती है। मनुष्यों की बोलियों में यह बदलाव कभी-कभी इतना सूक्ष्म होता है कि सामान्यतः पता नहीं चलता, पर बदलाव उसके जीवन की तरह होता अवश्य है। सच्चे अर्थों में व्यक्ति-बोली में परिवर्तन को ही ऐतिहासिक भाषा विकास कहा जाता है।

उपबोली या स्थानीय बोली :- भाषा का यह रूप भौगोलिक कारणों पर आधारित होता है। एक क्षेत्र-विशेष में कई लोगों की बोलियों में जब कोई स्पष्ट अन्तर नहीं दीखता तो उसे स्थानीय बोली या उपबोली कहा जाता है। प्रत्येक बोली के अन्तर्गत कई उपबोलियाँ होती हैं। किसी बोली के विवेचन में जब हम उसके दक्षिणी, पश्चिमी, पूर्वी आदि उपरूपों की बात करते हैं तब हमारा आशय स्थानीय बोली से ही होता है। भोजपुरी अवधी ब्रज आदि बोलियों में कई उपबोलियाँ भी कुछ विद्वानों ने मानी हैं।

हिन्दी में इन बोलियों के लिए बोली शब्द का ही प्रयोग होता है, जैसे हिन्दी भाषा हुई और भोजपुरी, अवधी, ब्रज, मगही, मैथिली आदि बोलियाँ हैं। उपबोली को बोली से भी कोई रूप कुछ विद्वान मानते हैं पर स्थान विशेष की विशेषताओं के कारण उनका अपना स्वरूप अलग दीखता है इसलिए प्रायः इसे बोली की ही संज्ञा दी जाती है।

बोली को भाषा से अलग किन कारणों से माना जाता है उसमें उसका स्थानीय एवं क्षेत्रीय रूप, असाहित्यिकता, व्याकरण से भी अलग माना जाता था, पर आज यह बात उलट गयी है। इसपर विचार

आज के संदर्भ में अध्ययन अतिआवश्यक है। आज बहुत-सी बोलियाँ हैं जिनमें गम्भीर साहित्य सृजन हुआ है। अवधी, ब्रज, भोजपुरी, मैथिली, मगही इन सभी बोलियों में साहित्य-सृजन होता रहा है जिससे हिन्दी समादृत हुई है। इस विषय पर विवेचन अगले वर्ग में किया जायेगा।

(मेघा शर्मा
हिन्दी विभाग
एस. एस. कॉलेज, जहानाबाद)